Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधु-बिन्दु एवं ज्योति-कण

702

लेखक :
सुदर्शन सिंह 'चक्र'

प्रकाशक :
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान,
मथुरा–२८१००१ (उ० प्र०)

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'मधु-बिन्दु' एवं 'ज्योति-कण'

●

सुदर्शन सिंह 'चक्र'

●

(इस पुस्तकको या इसके किसी अंशको प्रकाशित करने उद्धृत करने अथवा किसी भाषामें अनूदित करनेका अधिकार सबको है ।)

●

प्रकाशक-विभाग

श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान,

मथुरा—२८१००१

मूल्य : १)६०

"यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा रियायती मूल्यपर उपलब्ध किये गये कागजपर मुद्रित-प्रकाशित है ।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

दो शब्द

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधुरता सर्वप्रिय है। रस सबको चाहिये, किन्तु अविवेकपूर्वक चीनीका सेवन रोगका कारण बन जाता है। मधुर भी हो और स्वास्थप्रद भी। सुना है आपने कि शहद पथ्य है।

केवल पदार्थ ही कटु या मधुर नहीं होते। शब्द तथा विचार भी कड़वे या मीठे होते हैं। ये मीठे वाक्य हैं, विवेकको उद्‍बोधित करनेवाले मीठे वाक्य। ऐसे ढंगसे कह गये कि इन्हें आप घटना, कथाकी भाँति आत्मसात् कर सकें और ये मानसिक, बौद्धिक स्वास्थ्यके लिए पोषक, दोष-निवारक बन सकें।

श्रीकृष्ण जन्मस्थान
मथुरा
भाद्र शुक्ल ११, सं. २०३३ वि.

सुहृद,
सुदर्शन सिंह 'चक्र'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मधु-बिन्दु

●

दोष अपने आगे चलने वालेके दीखते हैं। जो अपनेसे पीछे है, उसके दोषोंपर दृष्टि नहीं जाती। न उससे ईर्षा होती। तुम जिसकी निन्दा करते हो, उसे अपनेसे बड़ा तो तुम स्वीकार कर चुके।



किसी मोटर ट्रकसे कुचलकर मरा कुत्ता सड़कपर पड़ा था। कुछ कौए उसके शरीरपर आ जुटे थे।

'बेचारा मर गया' एकने कहा।

'कौओंका भण्डारा हो रहा है।' दूसरेने कहा।

—प्रत्येक घटनासे किसीका लाभ, किसीकी हानि होती है।

—प्रत्येक घटनाको व्यक्ति अपने-अपने दृष्टिकोणसे देखते हैं।

—घटना न अच्छी होती न बुरी। घटना तो मात्र घटना होती है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कुत्तेके शरीरमें बहुत कीड़े चिपके थे। खुजली भी हो गयी थी। वह अपना शरीर खुजलाता रहता और बेचैन इधर-से-उधर भागता, चिल्लाता रहता था।

उपकारीजीने देखा। दया आ गयी। दौड़े बाजार गये और गेमेक्सीन पाउडर ले आये। कुत्तेको ढूँढ़कर उसके पूरे शरीरपर उसे छिड़का।

कुत्तेको शान्ति मिली लगती थी। उसका दौड़ना, खुजलाना, चिल्लाना बन्द हो गया था।

लेकिन दूसरे दिन कुत्ता मरा मिला। उसने अपना शरीर चाटा होगा। पेटमें जाकर गैमक्सीन उसकी मृत्युका कारण बना।

उपकार करनेके लिए भी योग्यता और समझदारी आवश्यक है।



'मैं तो उठ भी गया! तू अभी पड़ा-पड़ा रोता है?' वर्षाके कीचड़में दो बालक फिसलकर गिरे थे। उनमें-से एक उठा और साथीको चिढ़ाने लगा।

सचमुच गिरकर रोनेवालेसे गिरकर उठ खड़ा होने वाला महान् तो है ही। हँसी और आनन्द उसीका स्वत्व है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देनेमें ही पाना है।

नेताजी सुभाषचन्द्र वसु बर्माकी सभामें बोल रहे थे—, मुझे सोना दीजिये ! मुझे रक्त दीजिये ! मैं सर्वस्व माँग रहा हूँ। बदलेमें कुछ दे पाऊँगा, इसका कोई आश्वासन नहीं है।'

एक वृद्धा उठी। उसने सोनेकी जंजीर गलेसे निकाल कर देते हुए कहा 'बेटा ! तू ऐसे कैसे बोल रहा है ? तू धर्म दे रहा है। तू त्याग दे रहा है। तू परम गति दे रहा है। सम्भव है तू देशकी स्वतन्त्रता भी दे सके। पाना तो देनेमें ही है।'

नेताजीने झुककर वृद्धाके चरण छू लिये।



'बहुत उत्तम सत्संग हुआ।' एक सज्जन एक विद्वान् से मिल आये तो बोले।

'उन्होंने क्या कहा ?' मैंने पूछा।

'उन्होंने ?' वे चौंके—'वे तो केवल सुनते रहे।'

अधिक लोग अपने बोलनेकी वासना पूरी करते मिलते हैं किसीसे। अतः उत्तम श्रोता होना चाहिये।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

साहस लौटा

एक सेनापति युद्धमें पराजित होकर घर लौटे थे और टूटे हृदयसे अपने पराजयकी बात उन्होंने पत्नीको सुनायी थी। उनकी बात सुनकर पत्नीने का—'क्षमा करें, मेरे पास इससे भी बहुत बुरा समाचार है।'

'क्या ?' सेनापति चौंके।

पत्नी—'अब आपके कभी युद्धमें तो विजयी होनेकी आशा है ही नहीं, जीवनके किसी और क्षेत्रमें भी सफल होनेकी आशा नहीं है।'

'ऐसा क्यों ?' सेनापति थोड़े गुस्सेमें आये।

पत्नी—'युद्धमें जय-पराजय तो लगी ही रहती है; किन्तु आपकी निराशासे लगता है कि इस बार आप केवल मैदान ही नहीं हार आये, अपना साहस भी हार आये हैं।'

'धन्य देवि !' सेनापति उस समय सेना सम्हालने घरसे चल पड़े और जब मनुष्यका साहस लौट आया, पराजय टिक कैसे सकती है।



किये हुए उपकारको भूल जानेवाला कुपुरुष है।

थोड़ेसे उपकारको भी बहुत मानने वाला सत्पुरुष है।

जो व्यक्तिका कोई उपकार नहीं मानता, व्यक्तिका उपकृत नहीं होता, परमात्माका ही उपकार मानता है, वह महापुरुष है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

गौरव-दान

एक संत एक बँगलेपर भिक्षा करने पधारे। कोठीके स्वामीने देखा तो झल्लाया—'ये मुष्टण्टे! काम न धाम हरामका खाने निकल पड़े हैं।'

संतने धीरेसे कहा—'भाई मेरे! मैं तो तुम्हें दानी बनानेका गौरव देने आया था। तुम्हें पसन्द नहीं तो कोई बात नहीं।'

संत लौट पड़े; किन्तु कोठीके स्वामीने दौड़कर उनके चरण पकड़ लिये।



गंगाकी बाढ़में बहुत-सी मछलियाँ ऊपर एक गड्ढेमें आ गयीं। बाढ़ उतरी—पानी सूखने लगा तो वे मरने लगीं। बच्चोंने थोड़ी पकड़ी और लाकर एक हौजमें डाल दिया।

एक सज्जनको सूझा—'ये अपने यहाँ आ गयी हैं, अतिथि हैं।' उन्होंने एक थैली मुरमुरा हौजमें डाल दिया। मछलियोंने खूब खाया और घण्टे भरमें सब मर गयीं।

मछली बहुत कम अन्न पचा पाती हैं, यह वे नहीं जानते थे। केवल सद्भाव हानिकर होता है यदि उसके साथ समझदारी न हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सच्चा ग्रन्थ

भगवान बुद्धके उपदेशोंका जापानी भाषामें पहिले अनुवाद हुआ था। अनुवाद तो होगया, किन्तु वह छपे कैसे ? उस समय कोई धनी व्यक्ति इस ओर ध्यान ही नहीं दे रहा था। अन्तमें एक निर्धन बौद्धभिक्षुने यह काम पूरा करनेका निश्चय किया। उसने लोगोंसे एक-एक रुपया मांगना प्रारम्भ किया। उसके पास दस हजार रुपये हो गये। ग्रन्थ छपनेको इतना ही धन चाहिये।

अचानक जापानके उस प्रदेशमें अकाल पड़ गया। मनुष्य और पशु अन्न एवं तृणके लिए व्याकुल भटकने लगे। उस भिक्षुने वे दस हजार रुपये अकाल पीड़ितोंकी सेवामें लगा दिये।

अनेक लोगोंने कहा—'यह तुमने क्या किया ? अब ग्रन्थ कैसे छपेगा ?

भिक्षु मौन बना रहा। अकाल समाप्त होनेपर उसने फिर चन्दा माँगना आरम्भ किया। उसने फिर दस हजार रुपये एकत्र कर लिये, किन्तु फिर तभी उस प्रदेशमें जोरका भूकम्प आगया। उस भिक्षुने रुपये भूकम्प-पीड़ितों की सेवामें लगा दिये।

लोगोंने कहा—'यह पागल हो गया है।'

भिक्षु वृद्ध हो गया था। फिर उसने धन मांगना प्रारम्भ किया। फिर दस हजार रुपये उसने एकत्र किये।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सौभाग्यवश इस बार कोई विपत्ति नहीं आयी। उसने ग्रन्थ छपवाया।

ग्रन्थके मुख्य पृष्ठपर छपा था—'तृतीय संस्करण' इसके नीचे एक नोट छपा था—'ग्रन्थके पहिले दो संस्करण बहुत श्रेष्ठ थे। यह संस्करण उनके सामने सर्वथा नगण्य है।'

किसी महापुरुषकी शिक्षाका आचरण करना, उस शिक्षाका सच्चा प्रचार है, यह बात उस भिक्षुने ठीक समझी थी। जीवनमें यही बात समझने योग्य।

[एक जापानी जन - कथाके आधारपर]



गुलाबके फूलपर पड़ी ओसकी बूँद मोतीके समान झलमल कर रही थी।

ईर्ष्यालु कौवेने कर्कश स्वरमें कहा—'इतनी इठला मत। अभी वायुका झोंका तुझे महा मिट्टीमें फेंकने वाला है।'

बूँद दुगुनी चमकके साथ बोली—'सच! तब तो मैं इस सुन्दर गुलाबके पौधोंमें रस बनूँगी और एक दिन मैं स्वयं गुलाबका पुष्प बनकर उपवनको सुगन्धिसे भर दूँगी।'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बड़प्पन क्या है ?

एडवर्ड सप्तमकी महारानी एलेक्जेण्ड्रा बचपनसे परिश्रमी और उदार थी। वह रात-दिन काममें लगी रहती थी। उसने एक नियम बना रखा था—अपने हाथसे सुविधानुसार कोई छोटा या बड़ा वस्त्र तैयार करके प्रतिदिन किसी गरीबको देती थी।

किसीने कहा—'महारानी ! आप तो सिले-सिलाये कपड़े बाजारसे मँगाकर गरीबोंमें बाँट सकती हैं। यह स्वयं सीने-काटनेका श्रम क्यों करती हैं ?'

एलेक्जेण्ड्राने कहा—'मैं महारानी हूँ, यह बात तो ठीक; किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं है कि मैं विलासी बन जाऊँ। आलसी होना कुछ अच्छा तो नहीं है। बड़े होनेका अर्थ यह है कि मुझे अपनेसे छोटोंकी सहायताके लिए तत्पर रहना चाहिये । इसमें मुझे पूरे उत्साहसे काम करना चाहिये। मैं जो वस्त्र स्वयं परिश्रम करके तैयार करती हूँ, उसमें मेरा श्रम, स्नेह और सहानुभूति भी सम्मिलित होती है। उसकी तुलना बाजारसे खरीदे गये वस्त्र कर पावेंगे ?'



व्यायाम शिक्षकने जलमें तैरते युवकसे कहा—'जिसमें तुम डूब जाते थे, उसी जलपर तैर रहे हो। प्रेम भी पानीकी भाँति है। इसके विराट् स्वरूपमें तैरो तो आनन्द ही आनन्द है। इसे संकीर्ण बनाओ—शरीरमें सीमित करो तो इसमें डूब मरोगे।'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सावधानी !

'सेनाको दाहिनी ओरकी पहाड़ी पर ले जाओ !' अगले मोर्चेपर जमी एक सेनाके सेनानायकको बेतारके यन्त्र पर अपने सेनापतिका आदेश मिला।

'अच्छा श्रीमान् !' सेनानायकने आदेश स्वीकार कर लिया। यन्त्र बन्द हो गया।

सेना जिस पहाड़ीपर थी, बहुत महत्वपूर्ण पहाड़ी थी वह। उसे छोड़कर दाहिनी ओरकी पहाड़ीपर जानेसे शत्रुका ही लाभ दीखता था। सेनानायक 'दो मिनट' सोचता रहा। उसने फिर सैनिक मुख्यालयसे यन्त्रका सम्बन्ध किया।

'श्रीमान् ! आपने सेना दाहिनी पहाड़ीपर ले जानेको कहा; किन्तु.... ' सेना नायककी बात पूरी होनेसे पहले रोकदी गयी।

'हमने नहीं कहा' मुख्यालयसे उत्तर मिला—'बात क्या है ?'

'लगता है शत्रुको हमारे गुप्त संकेत मिल गये हैं।' सेनानायकने पूरी बात बतायी, उन्हें बदल दें।'

सेनानायक चूक जाता तो पूरी सेना मारी जाती। जीवन भी यही सावधानी चाहता है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

औंधे लोटेसे स्नान

एक कथावाचकने एक गाँवमें चातुर्मास्य व्यतीत किया। उन्होंने कथा सुनायी। कथामें श्रोताओंकी भीड़ भी अच्छी रही। चढ़ावा भी अच्छा हुआ; किन्तु कथावाचकको लगा कि सब अधूरा ही रहा है।

संयोगसे सूर्य-ग्रहण पड़ गया। ग्रामके लोग समीप गङ्गा-तटपर स्नान करने गये। कथावाचकजी वहाँ पहले पहुँच गये थे। वे गङ्गाजीमें उलटा लोटा डुबाते थे और वैसा ही निकाल कर सिरपर करते थे, पर उलटे लोटेमें पानी तो आता नहीं था। वे ज्यों-के-त्यों सूखे बैठे थे।

लोग उनके पास एकत्र हो गये। एकने कहा—'पण्डितजी! लोटा सीधा करो तो उसमें जल आवे। ऐसे उलटे लोटेसे तो एक बूँद भी जल सिरपर नहीं पड़ेगा।'

पण्डितजी बोले—'भैया! मैंने आप लोगोंको बहुत दिन कथा सुनायी है। हरिकथाकी गङ्गामें आप सबने भी तो अपनी बुद्धिका उलटा ही लोटा सदा डुबाया। संसारकी ओरसे बुद्धिका मुख हटाकर सीधा करते तो उसमें भगवद्-रसका अमृत भरता और वह आप लोगोंको आनन्द-सागरमें मग्न कर देता।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपना धन

'मुझे यज्ञ करना है। आप लोग श्रद्धा-प्रेमसे जो अपना धन देंगे, वह इस यज्ञमें लगेगा।' संतने भीड़के बीचमें खड़े होकर घोषणा की।

'कितना धन लगेगा ?' नगर सेठने पूछा।

'जितना मिल जाय, उतनेसे ही यज्ञ हो जायगा।' संतने कोई राशि नहीं बतलायी।

'आप यज्ञकी सब सामग्री मेरे मुनीबको लिखवा दें।' मैं सब मँगा दूँगा। चन्दा करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।' नगर सेठने प्रार्थना की।

'लेकिन आपके पास अपना धन कितना है ?' साधुने पूछा—'आपने स्वयं परिश्रम करके जो धन ईमानदारीसे कमाया है, वही यज्ञके काम आवेगा।'

'अपना धन ?' नगर सेठ चौंके। उन्होंने सिर झुका लिया।

साधुके पास नगरके मजदूर, आस-पासके किसान, कुछ खोमचे और ठेलेवाले आये। किसीने रुपये दिये, किसीने पैसे और किसीने अन्न, फल या वस्त्र। लकड़हारोंने लकड़ियाँ दीं।

'यह तुम्हारा अपना धन है ?' साधु प्रत्येकसे पूछते थे—'तुमने ईमानदारीसे परिश्रम करके कमाया है इसे ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नगरके धनी लोग, बड़े व्यापारी और सरकारी कर्मचारी आते थे, किन्तु उनका धन साधुने स्वीकार नहीं किया।

'यह आपका अपना धन है?' एक दिन नगर सेठ फिर आये। उन्होंने केवल चार आने पैसे साधुके पैरोंके पास रखे तो साधुने उनसे पूछा।

नगर सेठने अपना कुर्ता उतारा और साधुको कन्धा दिखाया। कन्धा छिल गया था। वहाँ घावका चिह्न था। पिछली दो रात वे वेश बदलकर स्टेशनसे बाहर मजदूर बनकर खड़े रहे थे। दो बार उन्हें भारी भार ढोनेको मिला। दूर तक वह बोझ ढोकर ये चार आने उन्होंने कमाये थे।

'सचमुच यह तुम्हारा अपना धन है।' साधुने वे पैसे ले लिये और बोले—'केवल ईमानदारीसे कमाये परिश्रमके धनकी सेवा ही भगवान स्वीकार करते हैं।'

चोरी, घूसखोरी, बेईमानी या चालबाजीसे जो धन कमाया जाता है, दूसरोंको ठगकर या दूसरोंके परिश्रमका जो धन कोई पा लेता है, उससे किया दान, पूजन, यज्ञ कोई पुण्य नहीं देता। ऐसा धन और ऐसे धनसे आयी सामग्री भगवान स्वीकार नहीं करते।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सन्तोष

वर्षा हो रही थी। छोटी चिड़िया भीगती हुई आयी और बरामदेमें बैठकर अपने पर फुर्र-फुर्र उड़ा कर पानी झाड़ने लगी।

बालक उसे देखकर बोला—'बिचारीके पास छाता भी नहीं। पानीमें भींग गयी है।'

चिड़िया बोली—'भगवान्‌ने मुझे तो पङ्ख दिये हैं। ये सर्दीमें कम्बल और वर्षामें छातेका काम देते हैं। इनसे उड़कर वर्षासे भागकर यहाँ आ गयी। बेचारे मोटे कीड़ेको देखो। वह घासके नीचे दुबका भींग रहा है। भाग भी नहीं सकता और कौआ या कोई चिड़िया आयी तो उसे खा लेगी।'

—सुख तो सन्तोषमें है। हमसे नीचेकी स्थितिमें कितने लोग हैं, यह देखो तो सन्तोष आ जाय।



निरपेक्षताका नाम ही सुख है।

निरपेक्षताका नाम ही समझदारी है।

किसीसे भी कुछ भी अपेक्षा करना उद्वेग, दुःख, निराशा देता है।

सृष्टिके—भाग्यके विधानपर अविश्वास ही अपेक्षा-वान बनाता है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

डरसे मरते कायर मूर्ख

एक सच्ची घटना सुनाता हूँ। बम्बईके एक मकानमें रात्रिको हल्ला मचा – 'साँपने काट लिया !'

जिसे साँपते काटा था वे तड़प रहे थे। मुखसे झाग निकल रहा था। दाँत नीले पड़ने लगे थे। उनके सम्बन्धी, मित्र सब आ गये। डाक्टरने इञ्जेक्शन दिया; किन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। वे बार-बार मूर्छित हो रहे थे।

एक साधु भी पासके मकानसे आ गये। उनके साथके ब्रह्मचारीने पूछा—' सांपने कहाँ काटा ?

' शौचालयके पास सीढ़ियोंपर'– किसीने बताया।

ब्रह्मचारी चला गया। शौचालयके पासकी बत्ती जलायी और एक रबड़के खिलौनेका साँप उठाये लौटा सबको दिखाकर बोला–' इस साँपने काटा है !'

वे सज्जन तुरन्त उठ बैठे और बोले—' अरे ! यह खिलौना तो कल मैं ही लाया था। लगता है बच्चोंने वहाँ सीढ़ीपर डाल दिया था। इसपर पैर पड़ा तो इसकी स्प्रिंग चुभ गयी पैरमें। मैंने तो समझा कि साँपने काटा है।'

वे उसी समय अच्छे हो गये। लेकिन अब बीमार थे तब भी कोई यह नहीं सोचता था कि बम्बई जैसे नगरमें तीन मंजिल ऊपर भवनमें-साँप कहाँसे आया।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गाँव-देहात और जंगलोंमें भी जिनको सचमुच साँप काटता है, उनमें-से अधिक लोग भयसे मरते हैं। भारतमें सैकड़ों जातिके सर्प हैं और उनमें-से केवल चार जातिके ही विषैले हैं। काटते निर्विष सर्प हैं और लोग डरसे मर जाते हैं।

सर्प काटे तो नीमके पत्ते चबानेको दो। पत्ते कड़वे न लगें तो सर्प विषैला था दवा करो। पत्ते कड़वे लगें तो सर्प निर्विष था, डरकी कोई बात नहीं है।



दो मित्र साथ जा रहे थे। सामनेसे एक व्यक्तिको आते देखकर एक मित्र सड़कके दूसरी ओर चले गये। मित्रने पूछा—'तुमने अकारण मार्ग क्यों बदला ?'

दूसरा मित्र—'सामनेसे जो सज्जन आ रहे थे, उन्होंने मुझसे कुछ ऋण ले रखा है। बेचारे अभावमें होंगे, अभी तक दे नहीं सके। मैं सामने पड़ता तो उन्हें संकोच होता।'

ऋण लेकर दिया न जा सके तो लेनेवाला लज्जित होता है; किन्तु देनेवाला उसे लज्जित करनेसे बचे, इतनी महत्ता कितनोंमें होती है ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक उच्च पदाधिकारी अंग्रेजने गवर्नरको लिखा—'यहाँके उच्च कर्मचारी मेरे प्रति सम्मान करने मेरे पास नहीं आते।'

गवर्नरने टिप्पणी लिखी 'सम्मान मनुष्यको अपनी योग्यता और सद् व्यवहारसे पाना पड़ता है। उसे सरकार या किसी दूसरेके दबावसे वसूल नहीं किया जा सकता।'



न्यायकर्ता कहीं सातवें आसमानमें नहीं है। वह अपने भीतर ही है।

दूसरा मेरी चोरी करे तो पापी और मैं चोरी करूँ तो निर्दोष—यह कसौटी वह अन्तर्यामी माननेसे रहा।

'जो दूसरोंका मेरे लिए बुरा है—मेरा भी वह बुरा है!' इसके विपरीत कोई तर्क वह नहीं सुनेगा।



मैल लगानी नहीं पड़ती, स्वयं लग जाती है। उसे धोते-छुड़ाते रहना पड़ता है।

भीतरकी मनकी मैल, दुर्गुण भी बुलाने नहीं पड़ते, आपने आप आ जाते हैं। उन्हें दूर करते रहनेका प्रयत्न बन्द करोगे तो वे जड़ जमा लेंगे।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

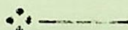
'आज एकादशी है।'

'नहीं, कल एकादशी है।'

दोमें खूब विवाद हुआ। दोनों एक संतके पास गये निर्णय कराने। वे ठंढे स्वरमें धीरेसे बोले—'हठ तो अहंकारसे होता है।'

'पर एकादशी कब है?'

'व्रत करना पुण्यकर्म है, अतः आज भी सही, कल भी सही।' उन्होंने दोनों दिन व्रत किया। पूछने वालोंने किया या नहीं, पता नहीं।



माधवराव पेशवा अपने जन्म-दिनपर दान कर रहे थे। अन्न, वस्त्र, स्वर्ण सभी कुछ था; किन्तु एक ब्राह्मण कुमारने कह दिया—'इन नाशवान वस्तुओंका दान नहीं चाहिये मुझे। दान देना है तो स्थायीका दान करें।

'स्थायी क्या है?'

'विद्या।'

पेशवाने इस तेजस्वी कुमारको काशी पढ़ने भेजा। यही कुमार आगे चलकर प्रसिद्ध न्यायाधीश रामशास्त्री हुआ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'आप तैरना जानते हो ?'

'नहीं।'

'कोई डूब रहा हो तो उसे आप बचाने पानीमें कूदेंगे।'

'ऐसा कैसे कर सकता हूँ। इससे मैं तो डूबूँगा ही, उसे भी डुबा दूँगा।'

'आप दूसरोंका सुधार– समाजका हित करनेमें लग गये हैं। आपने अपना सुधार किया नहीं। तब आप अपने इस प्रयत्नसे अपना और दूसरोंका हित करेंगे या·····?'



चूहे, चींटियाँ, दीमक, मधुमक्खी संग्रह करते हैं। अपने बिल या छत्तोसे बँधे रहते हैं।

गायोंको चारा दिया, भरपेट खाया, उसीपर बैठीं, गोबर-गोमूत्र किया।

देखा– शुकतालमें एक लंगूर आ गया था। लोगोंने दाने, अमरूद उसके आगे धरा, पर वह असंग बैठा था; क्योंकि उसका पेट भरा था।

कलकी चिन्तासे ऊपर होकर मानव मुक्त होता है। वही परमहंस होता है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'चीनी होगी तो चीटियाँ आवेंगी ही।'

'घरमें चीनी लाना बन्द कर दूँ या देशमें चीनी बनाना बन्द करवाना है?

'आप तो अप्रसन्न हो गये!'

'बात अप्रसन्न होनेकी है' गम्भीर स्वर हो गया— 'रसकी और सद्गुणकी निन्दा मत करो। उसे सुरक्षित करने-निर्विघ्न रखनेका उपाय सोचो।'



अमीन पाशा अफ्रीकामें औषधि-शोध-संस्थानकी ओरसे काम करने गये थे। जड़ी-बूटियोंकी खोजमें घूम रहे थे।

एक गाँव पहुँचे तो देखा कि वहाँ शीतलाका भयानक प्रकोप है। गुलामोंकी उस बस्तीके लोग चेचकसे मर रहे हैं।

'यहाँसे जल्दी चलिये! यह छूतका रोग है।' —सहकारीने कहा।

'तुम जाओ! मुझे यहाँ खुदाकी पुकार सुनायी पड़ती है।'—पाशाने यात्रा रोक दी और उस मृत्यु-ग्राममें रोगियोंकी सेवा करने लग गये।

अनेकको पाशाकी सेवाने जीवन दिया। अन्तमें रोग उन्हें लगा। चेचक निकली। मरते-मरते वे प्रसन्न थे। कह रहे थे 'खुदाकी मेहरबानी, उसने इस नाचीजकी खिदमत कबूलकी।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पत्ता वृक्षसे टूटकर गिरा ।

एकने कहा—'बिचारेका घर सदाको छूट गया ।'

दूसरा—'यह परिव्राजक बन गया ।'

पत्ता—'मैं इतना जानता हूँ कि अब मुझे खाद बनकर अपने निर्माताकी सेवाका सौभाग्य मिलेगा ।'



'सन्त ! कहाँसे पधारे ?' स्थानके अध्यक्षने पूछा तो आगत युवक साधु बोला—

'साधो आवे जाय सो माया ।'

घण्टे-दो-घन्टे बीत गये तो उसी युवकने स्थानाध्यक्षसे प्रर्थना की—

'भिक्षा क्या थोड़ी जल्दी करा देंगे ? कलसे भूखा हूँ !'

स्थानाध्यक्ष हँसकर बोले—

'साधो खाय-पिये सो माया !'

फिर गम्भीर होकर बोले—'मूर्ख, व्यवहारमें परमार्थ घसीटे तो परमार्थ भी नष्ट हो जायगा व्यवहार तो जायगा ही ।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

महामूर्ख

एक मनुष्यको अपनी परछाईसे बहुत भय लगता था। उसे अपने पद चिन्होंसे भी बहुत चिढ़ थी। उसने इन दोनोंसे पिण्ड छुड़ानेके लिए भाग जानेका निश्चय किया।

वह दौड़ा तो छाया साथ दौड़ी और पद-चिह्न भी बनने लगे। वह और जोर से दौड़ा। छाया भी साथ दौड़ रही थी। पद-चिह्न और गहरे होते गये।

वह और जोरसे—और जोरसे दौड़ता चला गया। थक गया, हांफने लगा; किन्तु मुठ्ठी बाँध कर दौड़ता ही गया। फल यह हुआ कि उसकी सब शक्ति जबाब दे गयी। वह गिरा और मर गया।

'वह महामूर्ख था। वृक्षकी छायामें या घरमें चला जाता तो परछाई से पिण्ड छूट जाता। चुपचाप बैठ जाता या पत्थरपर चलता तो पदचिह्न नहीं बनते।'

● वह मूर्ख था—महामूर्ख, यह तो ठीक; किन्तु तुम क्या हो? ये सब दुःख तुम्हारी छाया हैं। तुम्हारे मनसे निकले हैं, तुम्हारे प्रारब्धसे आये हैं। तुम संतोष रूप वृक्षकी छायामें बैठनेके स्थानपर उन्हें मिटानेके प्रयत्नमें जो भाग-दौड़ कर रहे हो, वह क्या बुद्धिमानी है?

● तुम्हारे पैरोंके गन्दे निशान हैं तुम्हारे कदाचरण। तुम अपनी बुराइयाँ अपनी सन्तानमें फैला रहे हो। तुम्हारी सन्तान, तुम्हारे अनुयायियोंमें बुराइयाँ न आवें, इसके लिए, क्या तुम सदाचरणकी दृढ़ शिलापर चलोगे?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

विष किसमें ज्यादा ?

'सर्प और चूहेमें विष किसमें अधिक है ?' एक साधकके मनमें प्रश्न उठा।

क्यों उठा ?

उसने देखाकि घासके ढेरसे घास लेते समय किसान को सर्पने काट लिया : किन्तु किसान अपना हाथ झटककर घासमें देखने लगा तो उसे भागता चूहा दीखा। घासमें छिपा चूहा, सर्पके डरसे भागा होगा।

'यह तो चूहा है।' कहकर किसानसे अंगुलीका रक्त पोंछा और घास उठा ले गया। उसे कुछ नहीं हुआ।

दूसरे दिन साधकने देखा कि किसान घास लेने आया तो धोखेसे चूहा उसके हाथमें आगया। चूहेने उसकी अंगुलीमें काट लिया। किसानने हाथ झटकाकर घासमें देखा तो चूहेका पीछा करता सर्प उसे दीख पड़ा।

'हाय ! मुझे सर्पने काट लिया।' किसान वहीं बैठ गया। उसको विष चढ़ने लगा। शरीर नीला पड़ गया। बहुत दवा हुई, पर वह मर गया।

साधकने यह सब सुनाकर महात्मासे पूछा तो वे बोले—सबसे अधिक विष मनुष्यके मनमें है। मनुष्यके मनका विश्वास विषको अमृत, अमृतको विष बना देता है। मन ही मनुष्यको पापी या पुण्यवान बनाता है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पण्डित—'मैंने जो पढ़ा, सब स्मरण है। अब कुछ पढ़नेको मन नहीं होता। अब तो नीरस पुस्तकें छपती हैं।'

श्रोता—'मैं एक बार बीमार हो गया था। कुछ पचता नहीं था। खाये अन्नकी डकार आती थी। सब आहार नीरस लगता था। भोजनकी रुचि नहीं रही थी। वैद्यने कहा था कि मुझे अजीर्ण हो गया है।'

पण्डित—'क्या ?'

श्रोता—'हाँ, मुझे लगता है कि आपको भी विद्याका अजीर्ण हो गया है। किसीसे औषधि कराइये। सद्ग्रन्थोंसे अरुचि अच्छा लक्षण नहीं है।'



'तुम धाराके विरुद्ध क्यों तैर रहे हो ?' मैंने देखा कि एक युवक बहुत श्रमसे तैर रहा है; किन्तु थोड़ा भी आगे नहीं बढ़ पाता।

'मुझे व्यायाम करना है।' उसने कहा।

ठीक बात है व्यायाम करना हो तो धाराके विरुद्ध तैरा जा सकता है; किन्तु पार करना हो और प्रगति करनी हो तो धाराके साथ तैरना होगा।

जीवनमें कालकी धाराको भी ऐसे ही परखना है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक पहाड़ी स्त्रीको उसके पतिने त्याग दिया था। एक पुत्र था उसके और वह कमाने लगा था। माँका वह पालन कर लेता था। वह पुत्र गंगामें डूब गया। अब उस स्त्रीका क्या होगा ?

आप क्या समझते हैं कि वह भूखों मर जायगी ?

यह भ्रम है कि उसका पुत्र उसका पालनकर्ता था। उसका पालन जो करता था, वह अब भी उसका पालन करेगा।

वही पालनकर्ता हमारा—आपका सबका पालन करता है। दूसरा पालनकर रहा है या करेगा–यह भ्रम है।



राग, पीड़ा और अभावोंको अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

मृत्यु टाली नहीं जा सकती।

लेकिन रोग, पीड़ा, अभाव दुःख न दें, यह किया जा सकता है।

मृत्यु विवाह जैसी मंगलमय बनायी जा सकती है।

कैसे ?

यह 'कैसे'—जाननेकी इच्छा जग जाय तो मार्ग दूर नहीं है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

गङ्गाजीमें बाढ़ आयी थी। जलमें भँवर पड़ रहे थे। लकड़ीके बड़े-बड़े स्लीपर भी वहाँ एक बार डूब जाते हैं।

पानीपर बहता एक छोटा लाल गुलाबका फूल आया। भँवर पर नाचता रहा कुछ क्षण। भँवर उसे डुबा नहीं सकता। उलटे उस पुष्पने कुछ क्षण भँमरके जलको अपने नृत्यसे मनोहर बनाया और फिर आगे बढ़ गया।

तन-धन, पद-परिवार, गुण-विद्याकी गरिमा जो लादे हैं वे भव-प्रवाहमें डूबते ही हैं। जिनमें अहंकारका भार नहीं, उन्हें वह डुबा पानेसे रहा। उलटे जब तक वे जगत्में रहते हैं, इसे शाभा और शान्तिसे भूषित ही करते हैं।



'सिद्धिके लिए चाहिये साधना!'

'सिद्धि किस लिए चाहिये?'

'प्रसिद्धिके लिए।'

'और प्रसिद्धि?'

'भोग और सम्मानके लिए।'

'और भगवानके लिए?'

'उनके लिए तो प्रेम चाहिये।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'आपको ज्वर आगया ?' मित्रने सहानुभूतिपूर्वक पूछा ।

'हाँ, यह अतिथि आ गया है ।'

'रोग भी अतिथि ?' वे बोले ।

'रोग क्या तिथि बतलाकर आता है ?' मैंने कहा— 'रोगोंके देवता क्यों अतिथि नहीं हैं ? सच्चे अतिथि तो वे ही हैं ।'

'तब आप अनाहार क्यों हैं !' उन्होंने तर्क किया ।

'अतिथि भोजन कर रहे हैं ।' मैंने हँसकर कहा— 'उनके भोजन करके जानेसे पहले मैं भोजन करने लगूँ— यह क्या शिष्टता होगी ?'

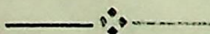


'भगवान्‌के दर्शनका उपाय बतलाइये !' एक भक्ताचार्यसे श्रद्धालुने आग्रह किया ।

'दर्शन हो जानेपर तुम क्या करोगे ?' आचार्यने पूछा ।

श्रद्धालु—'भगवान् करावेंगे वह करूँगा ।'

आचार्य—'अभीसे ऐसा जीवन बना लेनेमें कोई बाधा है ?'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आज करेंगे

—पढ़ना है—आज करेंगे ।
—धर्म है—आज करेंगे ।
—सेवा है—आज करेंगे ।
—दान है—आज करेंगे ।
—किसीसे क्षमा माँगती है—आज करेंगे ।
—किसीका ऋण देना है—आज करेंगे ।
—सत्य-पालन—आज करेंगे ।
—दीन-रक्षा—आज करेंगे ।
—व्रत-पालन—आज करेंगे ।
—भगवान्‌का स्मरण—आज करेंगे ।
—दृढ़ प्रतिज्ञा—आज करेंगे ।
—जीव-दया—आज करेंगे ।
—ब्रह्मचर्य-पालन—आज करेंगे ।
—बड़ोंकी आज्ञा—आज करेंगे ।
—बड़ोंका आदर—आज करेंगे ।

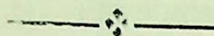
'आज करेंगे । अभी करेंगे ।' कोई उत्तम काम कलपर मत टालो । उत्तम काम आज करो । अभी करो ।

कल-कभी नहीं आता ।
कलपर उत्तम काम टालनेवाला पछताता है ।
आज कभी धोखा नहीं देता ।
आजको सम्हालनेवाला महान् बन जाता है ।
बीते कलको आज सुधार देगा ।
बीते कलका आज गुरु है ।
आनेवाले कलका आज बाप है ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आज जैसा—आने वाला कल वैसा ।
आज तुम अच्छे तो, जीवन भर अच्छे ।
आज तुम बुरे—पता नहीं अच्छे बनो भी या नहीं ।
आज अच्छे बने रहो ।
आज सच्चे बने रहो ।
आज धीर बने रहो ।
आज धर्मात्मा बने रहो ।
आज करो ! हर अच्छा काम आज ही कर लो !



यदि पता लग जाय कल तुम्हें मर जाना है तो आज क्या करोगे ?

—सबका कर्ज चुका दोगे ।

—जिनका अपराध किया, उनसे क्षमा माँग लोगे ।

—परिवारके लोगोंको उनका हक दे दोगे । उनका काम उन्हें सौंप दोगे ।

—जिसे जो कहना-बतलाना है सब कर दोगे ।

—यह सब करके दान-धर्म करोगे और भगवान्का नाम लोगे ।

ठीक बात ?

तब कानमें सुनो—'कल तुम्हें मर जाना है ।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

कल करेंगे

किसीको कष्ट देनेकी बात है—कल करेंगे।
किसीको डाँटनेकी बात है—कल करेंगे।
किसीसे बदला लेना है—कल करेंगे।
किसीका अपकार करना है—कल करेंगे।
झूठ बोलना ही है—कल करेंगे।
कुछ मौज-शौक या उपद्रवकी बात है—कल करेंगे।
कोई अनुचित काम करना है—कल करेंगे।
कोई व्यर्थ या शौककी वस्तु लेनी है—कल करेंगे।
कोई व्यर्थ धूमधाम करनी है—कल करेंगे।
साथीके दबावमें कोई व्यसन लेना है—कल करेंगे।

'कल करेंगे। कल करेंगे!' टालते जाओ जहाँ तक टाल सको वह सब जो कर्तव्य नहीं है। जो जीवनके लिए आवश्यक नहीं है और जो उचित नहीं है, उस सबको।



एक छोटा कीड़ा भयसे भाग रहा था। पूछा—'इतना डरते क्यों हो? मरकर तो इस योनिसे छूटोगे ही।'

कीड़ा—'इस देहमें प्रायश्चित तो हो रहा है। मैं मनुष्य जितना मूर्ख नहीं कि जान-बूझकर विनाशको आमन्त्रण दूँ।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

वह लड़की थी

'मुन्ने ! तुमने बहू देखी ?' एकके घर विवाह था। वहाँसे माताके साथ मुन्ना लौटा तो पिताने पूछा।

'वह तो लड़की थी।' मुन्नाने हँसकर बतलाया।

---जगतमें जहाँ कहीं अद्भुत आश्चर्य देखने आप जाते हो, लौटकर क्या कुछ ऐसा ही अनुभव आपको नहीं होता ?



पशुत्व---

अज्ञता, अविवेक,
ऐन्द्रियक तृप्तिकी उद्दाम वासना।

दानवत्व---

उत्पीडन, दुर्दम अहंकार,
अप-कर्म करनेमें गौरवानुभूति।

मानवत्व --

संयम, विवेक, सद्भाव,
सर्वेशके प्रति अन्तरकी उन्मुखता

अब आप देखो --

कितना पशुत्व आपमें।

कितना मानवत्व अपना पाये हैं।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

—'मेरे गुरुजीके पास कार है!' एक साधुने सगर्व कहा।

'आपने छोटा गुरु बेकार किया। जिनके पास दस बीस कारें हैं, उन उद्योगपतियोंमें-से गुरु बनाना था।'

'क्या ?' चौंके वे।

– साधुकी महत्ता उसके धन-वैभवमें नहीं है। उसके ज्ञान और त्याग-वैराग्यमें है।



विश्वासके बिना व्यवहार नहीं होता।
विश्वासके बिना परमार्थ नहीं होता॥
विश्वासके बिना भक्ति नहीं होती।
विश्वासके बिना ज्ञान नहीं होता॥
विश्वासके बिना समाधान नहीं होता।
विश्वासके बिना मनुष्यका कल्याण
नहीं होता॥



चौराहे पर जाकर किधर आगे जाना है यह सोचे बिना जो चल देगा, क्या गति होगी उसकी ?

तुम जीवन के चौराहे पर खड़े हो। मनुष्य-जीवन स्वर्ग-नरक, संसार और मोक्ष का चौराहा है। वहाँ तुमने अपना गन्तव्य निश्चय कर लिया है।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

शरीर किसका ?

'यह मेरा है। मैंने इसे उत्पन्न किया है।' माता-पिताका झगड़ा है।

'यह मेरा है।' पत्नीका अपना तर्क है और पुत्रोंका अपना तर्क।

'मेरा स्वत्व है इस पर !' प्रशासन कहता है और पालन-पोषण करनेवाले भी कहते हैं। नौकरका स्वामी कहता है।

'मेरा है यह !' पढ़ानेवाले, मन्त्र देनेवाले कहते हैं।

'हम इसे खायेंगे यह हमारा है।' कुत्ते, गीध, कीड़े और अग्निका दावा है।

'यह मेरा है।' आप भी शरीरको यही कहते हो; किन्तु आपने अपने दावेकी सत्यता कभी सोचा है ?



छोटेसे गढ्ढेमें पानी भरा है। अभी वर्षा बीती है। दो नन्हीं मछलियाँ उसमें किलोल कर रही हैं। मग्न हैं अपने आनन्दमें।

गड्ढा छोटा है। पानी परसों तक सूख जायगा।

आज भी कोई बगुला आ सकता है इधर :

बेचारी मछलियाँ !

—किन्तु अपने नन्हें सुखमें डूबे मनुष्य क्या इनसे विशेष सज्ञान हैं ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक रात पागलखानेमें आग लगी। नीचेसे बचानेवाले दूसरी मंचिलपर रहनेवाले पागलोंको पुकारने लगे—'खिड़कियोंमें-से कूद पड़ो। हम कपड़ोंमें तुमको झेल लेंगे।

पागल ताली बजाते हुए बोले—'आज इतने वर्षोंपर तो यह मजेदार दीवाली जगी है। हम इसे छोड़कर नीचे उतर आवें, ऐसे पागल नहीं हैं!'

—'इतने श्रमसे, इतने दिनोंमें यह सम्पत्ति, सफलता, कुर्सी मिली है। इसे छोड़कर हम अब साधन-भजनमें लग जायँ, ऐसे पागल नहीं हैं।' इस प्रकार कहने-सोचनेवाले लोग क्या उन पागलोंसे अधिक समझदार हैं?



पक्षीने तिनका लाकर रस्सीपर रखा, वह गिर गया फिर गिर गया।

'मूर्ख है!' बार-बार पक्षीको निष्फल प्रयत्न करते देख मित्र बोले।

'यह महाकालके वक्षपर भवन—पद-प्रतिष्ठा, धनके प्रयत्नमें व्यस्त मनुष्य—ये इस पक्षीसे अधिक समझदार हैं?' मैंने पूछा।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुझे आपपर विश्वास नहीं।'

'धन्यवाद ! आपको अपने आपपर विश्वास है ?'

'सो तो है।'

'ठीक देख लीजिये ! जिसे अपनेपर विश्वास है, उसे दूसरेके विश्वासका प्रयोजन ही नहीं रहता।'



'ओह बेचारा !' शिष्यने पेड़से टूटकर गिरे पीले पत्तेको उठाते हुए कहा।

'उसे धन्यवाद दो' गुरु बोले—'उसने उचित समयपर नव-किसलयके लिए स्थान रिक्त कर दिया है।'



'इनको यहाँसे भगा दें!' खण्डहर जैसे कमरेमें ततैयोंके कई छत्ते थे। वे वहाँ रहने वाले संतको प्रायः काट लेते थे। अतः एकने एक दिन कहा।

'ये इसे अपना घर मानती हैं। इनका यहाँ ममत्व है। मेरा तो ममत्व नहीं है। अतः यहाँसे जाना ही हो तो मुझे जाना चाहिये।' सन्तने उत्तर दिया।



श्रीराम दशरथ-पुत्र हैं और दशानन हंता। तुम दस इन्द्रियोंको वश करके दशरथ बनोगे या दस इन्द्रियोंसे उनके-उनके भोग-भोगने—खानेको आतुर दशानन ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'दुष्ट !' पैरमें काँटा चुभा तो एक यात्रीने उसे कोसा ।

'धन्यवाद !' एक साधुके पैरमें काँटा चुभा तो उसने उसे निकालते हुए कहा—'आप तो संत हैं ! मार्ग देखकर चलनेके लिए सावधान करते हैं !'



'आपकी आयु कितनी ?'

'तीन वर्ष सात दिन ।' लगभग साठ वर्षके बूढ़ेका उत्तर था ।

'कहते क्या हैं ?' पूछने वाला चौंक गया ।

बूढ़ा बोला—'पहिले तो मैं पशु था । ऐसे पशु-जीवन मेरे अनन्त होंगे । केवल तीन वर्ष सात दिन हुए जब मैंने संयमका, साधनाका जीवन प्रारम्भ किया है । मेरे मनुष्य बननेकी आयु तो यही है ।'



मुझे शक्तिसे स्नेह है ।
शक्तिहीनतासे भला कौन स्नेह करेगा ।
लेकिन शक्ति आसुरी है या दैवी ?
मुझे लगता है कि मनुष्य उसके साथ
अपनेको मिलाकर उसे आसुरी बना देता है ।
अन्यथा शक्ति तो अम्बा है ।
मुझे महाशक्तिसे—अम्बासे स्नेह है ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

स्वप्नमें एक देवताने धमकाया—

'तू मेरी बात नहीं मानेगा तो देख……'

स्वप्नमें ही मेरा अक्खड़पन जाग गया। देवताको झटककर बोला—'तब तू क्या कर लेगा ?

अभी तू देवता है, फिर कुत्ता, गीध, शृगाल—क्या बनेगा ?

इस शरीरको ही तू नोच सकता है नोच खा—पर तब तू देवता रहेगा ?

अथवा शरीरके आगे तेरी गति है ?'

देवता अन्तर्धान हो गया।



'देखके चलो, पथ कण्टकोंसे पटा पड़ा है !'

'वे अपना सिर बचावें। मेरा जूता बहुत मजबूत है।' बचपनमें मैं प्रायः यह कह देता था।

'सम्हलके चलो ! कर्मका नियन्ता बड़ा निष्ठुर है।'

'उसे अपनी चिन्ता स्वयं करनी चाहिये। मेरा कन्हाई भी कम नटखट नहीं है' यह अबका उत्तर है मेरा।

दोनों उत्तरोंमें अन्तर दीखता है आपको ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

समझका दोष

श्रीउड़ियाबाबाजी महाराजको एक साधु लगातार गाली दे रहा था, एक भक्तने कहा—'वह तो बकता ही जा रहा है।'

महाराज बोले—'तुम मच्छरोंका भनभनाना नहीं समझते तो उसकी बात क्यों समझते हो ?'

जीवनके बहुतसे क्लेश अनपेक्षितको समझनेसे ही हैं।



साधुता

एक साधु एक दूकानके सामने रुके। कृपण दूकानदार चिढ़कर बोला—'क्या चाहते हो ?'

साधु—'मैं तो भिक्षाके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहता। तुम क्या चाहते हो ?'

दूकानदार और चिढ़कर—'मैं चाहता हूँ तुम्हारी मौत।'

साधु हँसे—'समझ लो मैं मर गया। अब कफन लाओ। मुझे एक चद्दर मिलेगा। तुम्हारे यहाँ दुबारा तो आना नहीं है।'

हर कटुताको मधुरतामें बदल ले सके वही तो साधुता है।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'आजकल दुबले दीखते हो।'

एक परिचित अवधूतसे बहुत दिनोंपर मिलना हुआ तो मैंने पूछा।

'तुम कसाई कबसे हो गये ?'

अवधूत क्या जो अटपटा न बोले।

'क्यों ?' मैंने पूछा।

'देहका दुबला-मोटापन कसाई जाँचता है। उसे मांस बेचना होता है।' अवधूत बोले—'मैं दुबला-पतला या मोटा होता हूँ कहीं ?'



वे युवक साधु आये तो कुत्ता भूंकने लगा। वे उसकी ओर देखकर हँस पड़े।

'आप हँसे क्यों ?' मैंने पूछा।

वे बोले—आज बनके मार्गसे आते अचानक शेर मिल गया था। वह मुझसे कुछ गज दूरसे निकल गया; किन्तु मेरी ओर उसने देखा तक नहीं। यहाँ यह कुत्ता मुझे दूरसे देखकर भूंकने लगा।'

'कुत्ते—क्षुद्र जन अकारण भूँकते-गुर्राते हैं। मेरे मनमें आया—'लेकिन शेर बिना छेड़े आँख उठाकर देखते तक नहीं कि पाससे कौन निकल गया।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

अपवित्र हाथ

सिक्खोंके दशम गुरु गोविन्द सिंहजी आनन्दपुर साहबमें उन दिनों ठहरे थे। एक दिन उन्होंने भक्तोंके साथ सत्संग करते-करते बीचमें कहा—'मुझे प्यास लगी है।'

एक सज्जन बड़ी हड़बड़ीमें उठे और झटपट मटकेमें-से एक बड़ा ग्लास पानी भर लाये। गुरुने गिलास लिया और उसे मुखकी ओर बढ़ाया। अचानक उनकी दृष्टि पानी देनेवाले सज्जनके हाथकी ओर गयी। गुरुने पूछा—'तुम्हारा हाथ स्त्रियोंकी भाँति सुकुमार क्यों दीखता है ?'

वे बोले—'आपकी कृपासे कोठीमें नौकर-चाकर बहुत हैं। मुझे अपने हाथसे एक ग्लास जल भी नहीं भरना पड़ता।'

'अच्छा !' गुरुने गिलासका पानी बिना पिये गिलास नीचे रख दिया और गम्भीर हो गये।

'आपने जल नही पिया !' उन सज्जनने हाथ जोड़ा।

'जिस हाथने कभी किसीकी सेवा नहीं की, वह अपवित्र हाथ है।' गुरुने कहा—'ऐसे हाथसे दिया गया अपवित्र जल मैं कैसे पी सकता हूँ।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

थूकका दलदल

रमते राम महात्मा थे। एक कमण्डलु, छोटा-सा बिस्तरा। मन लगा, पड़े रहे। मन उचटा तो बिस्तरा समेट कन्धेसे लटकाया, कमण्डलु उठाया और चल खड़े हुए।

हर सूना मन्दिर उनकी कुटिया। हर वृक्ष उनका तम्बू। हर गाँवके कुछ घरोंकी रोटी उनकी प्रतीक्षा करतीं।

एक आश्रममें ठहर गये। कफ आया, एक ओर थूक दिया। आश्रमके व्यवस्थापकने देखा तो बिगड़ा—'चाहे जहाँ थूकना हो तो अपनी कुटिया बनवाओ!'

बात लग गयी। श्रद्धालुओंसे कह-कहाकर भूमि ली। ईंटके गधे गिने, कारीगर-मजदूरोंसे झगड़े। कुटिया बन गयी।

गर्मी आयी। उत्तरा खण्ड जानेकी इच्छा हुई। कुटियापर रहे ऐसा साधु ढूँढ़ रहे थे। किसीने पूछा—'आप इस बन्धनमें कैसे फँसे?'

'थूककी दलदलमें फँस गया।' महात्मा बोले—'दो क्षण दो कड़ी बात सही नहीं गयी, अब अपनेपनेका लक्कड़ गलेमें अटक गया।'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जैन मुनि संघके साथ नदी पार कर रहे थे। अचानक एक डूबती स्त्रीका करुण चीत्कार सुन पड़ा। मुनि दौड़े, स्त्रीको उठाकर कन्धेपर रखा और किनारे पहुँचाकर भूमिपर लिटा दिया। फिर अपना मार्ग पकड़ा।

'आपने यह क्या किया ? आपने स्त्रीका स्पर्श करके व्रत भंग किया।' एक साथीने उलाहना दिया। लेकिन मुनि मौन बने रहे।

सन्ध्या हुई। प्रतिक्रमण पूरा हुआ। सब लोग रुके। उस दूसरे मुनिने पूछा—'प्रायश्चित किया ? पाप साधारण तो नहीं था।'

मुनिने शान्त स्वरमें कहा—मैंने तो विपत्तिमें पड़ी स्त्रीको उठाकर किनारे ही छोड़ दिया, पर आप तो अब भी उसे मनमें उठाये फिर रहे हो।'



'तुमको क्या चाहिये ?' एक सिद्ध सन्तने पूछा।

'कुछ भी नहीं ! स्वस्थ स्वर था उत्तरका।

'तब तुम क्यों बार-बार आते हो ?'

'आप सन्तोंका दर्शन अच्छा लगता है !'

'तुम स्वयं सन्त हो।' सन्तने श्रद्धासे हाथ जोड़े।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक सज्जन गीता पढ़ रहे थे। पूछा—'आपको संस्कृत आती है ?'

बोले—'नहीं। मैं तो श्रीकृष्णके शब्द रट रहा हूँ। कभी तो वे देखेंगे कि कोई उनकी बातकी नक़ल बना रहा है।'

'क्या होगा इससे ?'

'खुश-नाराज कुछ तो होंगे।' वे 'बोले—उनकी दृष्टिमें आना क्या थोड़ा है ?'



'गुरुजी ! यहाँ प्रवचन नहीं करेंगे ?' एक सन्त एक नगरसे जाने लगे तो उनके शिष्यने पूछा।

सन्त बोले—'क्या प्रवचनके द्वारा ही उपदेश दिया जाता है ? हम यहाँ रहे, यहाँके लोगोंने हमारा व्यवहार देखा, रहन-सहन देखा, क्या यह उपदेशके लिए पर्याप्त नहीं है ?'



'आप तत्त्वज्ञानी हैं ?' एक महात्मासे किसीने पूछा।

'तत्त्वज्ञानी तो कभी कोई होता ही नहीं।' महात्माने फक्कड़पनसे कहा।

'क्या ?' पूछने वाले चौंके।

'तत्त्व होता है और वह है ज्ञान।' महात्मा बोले—'उसे जाननेवाला बनेगा वह तो अज्ञानी होगा।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पण्डितने कहा—'सूर्य ईश्वर है। मन्दिरोंमें ईश्वर है। गंगा, गौ, तुलसी, अश्वत्थ....... ।'

साधकने रोका—'नहीं, जो दीखता है वह ईश्वर नहीं है। जो देखता है, वह ईश्वर है।'

अवधूत हँस पड़ा—'जो दीखता है वह भी और जो देखता है वह भी ईश्वर ही है। ईश्वरके अतिरिक्त दीखना-देखना झूठा है।'



'सन्त किसे कहते हैं ?' एकने अवधूतसे पूछा।

'जिसे सूझे वह सन्त !' अवधूतने हँसकर उत्तर दिया।

'सब लोग क्या अन्धे हैं ?' वे नाराज होकर बोले।

'न सही अन्धे' अवधूतने कहा—'सो रहे हैं सब।'

आपको याद आता है—'मोह निसा सब सोवनिहारा।'



एक सन्त गंगा किनारे बैठे थे। एकने पूछा—'क्या देखते हैं ?

सन्त—'ईश्वर।'

'वहाँ नगरमें ईश्वर नहीं है ?'

'है; किन्तु वहाँ वह बहुत व्यस्त है। उसे मेरी ओर देखनेका अवकाश नहीं। यहाँ वह मेरी ओर देखता है।'

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

आपका किला

'कोई तुमपर आक्रमण करे तो तुम क्या करोगे ?' एक साधु पूछा करते थे ।

'आप क्या करेंगे ?'

'मैं अपने किलेमें बैठ जाऊँगा ।' साधुका उत्तर था ।

एक डाकूने आक्रमण किया उनपर । तलवार निकालकर उसने पूछा—बता ! तेरा वह गुप्त किला कहाँ है ?'

डाकूको भ्रम था कि साधुके पास कोई गुप्त स्थान है और वहाँ धन हो सकता है ।

'यहाँ' साधुने हृदयपर हाथ रखा । 'मेरी आस्था-श्रद्धा मेरा दुर्ग है । वहाँ तक तुम्हारी तलवार नहीं पहुँच सकती ।'

डाकू साधुके चरणोंपर गिर पड़ा ।



'आंधी आ रही है ! द्वार तथा खिड़कियाँ बन्दकर लो !' महन्तजीने सेवकको पुकारा ।

काम-क्रोध-लोभ-मोहादिकी आंधी आती है, तब आप इन्द्रियद्वार बन्द करके बैठ जाते हैं या नहीं ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

ज्योति-करण

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

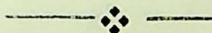
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मानव !

देव तुम्हींमें, दैत्य तुम्हींमें,
मनुज ! सृष्टि-शृङ्गार तुम्हीं हो।
जगतीके उद्धार तुम्हीं हो,
धरणीके गुरु भार तुम्हीं हो।
जागो और सम्हालो जीवन–
तुम्हीं–तुम्हीं अवतार तुम्हीं हो।
यदि पद भटके तो अब देखो–
सकल सृष्टि संहार तुम्हीं हो।



पैदा हुए–पढ़े, बढ़े-
खाया, भोगा, सोया।
इतना ही इतिहास हाय-
मानवका हो गया !



सन्तोष किया, सह लिया,
क्या किया—इतना किया !
कष्टमें, विपत्तिमें हंसते,
तब गौरव था।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक दिन

एक दिन जीवनका सबसे महत्वपूर्ण,
एक दिन जीवनका सबसे महान है।
एक दिन जीवनका जीवन बनाने वाला,
एक दिन जीवनका करता कल्याण है।
कौनसा दिन वह जीवनमें परम धन्य है ?
कौन दिन जिसका भला इतना सम्मान है ?
जानते नहीं हैं उसे सचमुच अब तक क्या ?
आजका ही दिन वह जो आज वर्तमान है।



'श्रम होगा ! कष्ट होगा !'
ठीक; किन्तु परिणाम ?
परिणाम उत्तम हो तो श्रम या कष्टसे--
भयका क्या काम।



अपने किये बिना हृदय शुद्ध नहीं होता।
अपने किये बिना साधनका फल नहीं होता।।
अपने जगे बिना जागरण लेखा नहीं जाता।
अपने मरे बिना स्वर्ग देखा नहीं जाता।।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

सबकी ओर मत देखो—
सब जा रहे दौड़े नरककी ओर।
तुमको भी कूदना है—
ऐसे उसी कूएँमें ?
नहीं—तो अपना तुम
पृथक् पुण्य-पथ देखो।



असन्तोष है धनसे जनसे
और प्राप्त निज भोगसे।
भाग्य तुम्हारा भवमें भटको,
दुःख पाओ हृद्रोगसे॥



कहते हैं कुछ और कुछ करते हैं,
इनसे भला और क्या आशा !
धोखा-धड़ीका ही नाम माया है,
भूल मत, देखे जा तू तमाशा।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मैंने पूछा शैतानसे—

'तुम क्यों शैतान हो ?
क्यों देते हो लोगोंको पतन ?'

बोला वह—

'स्वर्गमें—सचाई, अच्छाईमें—
नहीं लगता लोगोंका मन।
करते हैं मेरा आवाहन।
झूठा चाहिये उन्हें आश्वासन।
इसीसे पाता हूँ मैं तन।'

'पिछड़े हुए लोग तुम—
छिः !'
'ठीक कहते हैं आप—
पतन-पथ दौड़नेमें,
दोष-पाप जोड़नेमें,
करनेमें विकृत मन-इन्द्रियोंको,
बढ़ें न कभी पद !
भोगूँ न कभी ऐसा अभिशाप !'

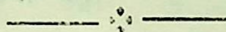
CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

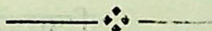
'सबने धोखा दिया !'
अच्छा किया ।
रेतके कणोंसे-
तेल पाने चले थे आप !



शून्यसे संख्याका गुणा ,
शून्य ही तात ।
अहंकर - अहंकार
मिलते तो विस्तार
अहंकर - निरहंकार --
कोई न होगी बात ।



बिना 'बैंक वैलेंस' पक्षी चहकते हैं ।
बिना देखे 'भाई-बन्धु' खिलते हैं फूल ।।
रोते हो इसको या उसको निमित्त बना-
भला तो सोचो यह किसकी है भूल ।।



मैं ऐसा-- मैं वैसा ,
मेरा यह—मेरा वह !
रोये सब चार दिन
साथ गया कितना कह ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मूर्ख—
लोगोंके मानसे फूलता जो।
मूर्ख—
'लोग कहेंगे क्या' सोच पथ-विच्युत हो।
मूर्ख—
देह चिन्ता जिसे व्याकुल-भटकाती है।



'मैं' क्या—सोचो !
हड्डी, मांस, चर्मका थैला,
बहुत घृणित—
मत नोचो !!



नामके लिए बहुत किया,
देहके लिए बहुत किया,
बहुत कुछ किया है स्वजन—
परिवारको।
क्या किया अपने लिए—
अपने आत्माके लिए
क्या किया जिससे
अब आपका उद्धार हो ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मरते जगमें हैं सभी
योगी-तापस-शूर ।
मरते बार अनेक पर
कायर-कामी-क्रूर ।।



'आये मनुष्य हो जगत्में—
क्या किया ?'
'पशुओं सा पेट भरा,
बच्चे उत्पन्न किये,
मर गया !'
व्यर्थ गया मानवत्व—
हाय राम !



हरि अपने तो सब कुछ अपना ।
नहीं - जगत यह केवल सपना ।।
जिनको कहते - अपना - अपना ।
वही तुम्हें देगें यों दफना—
बीत गया ज्यों कोई सपना ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'ईश्वर हमारा है'
भय गया, शङ्का गयी,
चिन्ता समूल गयी सर्वदा।
खोकर यह विश्वास—
अनाथ - असहाय, बकनेकी
मूर्खता है करता और
कहता है मानव—
'मैं बुद्धिमान हो गया!'



जन-जन मानसमे जिसकी हो आरती,
ऐसा पवित्र जीवन, ऐसी मुख भारती।
सच्चा परमार्थ सधे—यह स्पृहा करो।
पशुसे भोगोके पीछे क्यों व्यर्थ मरो॥



जिसमें जितना स्नेह भरा है,
वह उतना ही जलता है।
पर प्रकाश तो इसी स्नेहके—
बूते पर हो पलता।
जीवनकी--दीपकको एक कहानी,
बिना स्नेह कभी कोई हुआ है ज्ञानी?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

बरसकर मेघ अब रीत गये।
जीवनके दिन यों ही बीत गये।
इसकी उपलब्धि ?
जगत सुख पावे।
जीवन अनन्तसे—
एक हो जावे ।।



मैं तुम्हारे पास आया क्या मिला ?
किसीकी तुमने निन्दाकी,
किसीको तुमने गाली दी।
किसीके तुमने गुण गाये,
किसीसे अपना किया गिला।
भरा मेरे मनमें बस द्वेष।
करूँ मैं भी अब तुमपर रोष ?
जगत ही भरनेका सब यन्त्र।
मित्र तुम ? ऐसा रहा प्रयत्न !
किया तुमने क्या अहो भला ?
मैं तुम्हारे पास आया क्या मिला ?



देकर बनाते यदि दूसरेको दयनीय,
दान नहीं-अहंकार अपना बढ़ाते हो।
देना हो तो दो परमात्माकी सेवामें,
लेना हो, प्रसाद उस प्रभुका ग्रहण करो ।।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

धन देता है—
भोग-साज, सम्मान भी।
धन देता है—
दान, कीर्ति, गुणगान भी।
धन देता है—
रोग, गर्व, अपकार भी।
धन देता है—
गौरव, पद, उपकार भी।
धन देता है—
स्वर्ग, नरकका द्वार भी।
धन देता है—
त्याग, पुण्य-उपहार भी।
धन पाया—
उपकार करो, परलोक सुधारो।
धन पाया—
मत बनो भोग प्रिय, लोक बिगाड़ो।



चिड़िया बोली—'चीं चीं चीं,
मैं यदि होती भैंस कहीं—
अपना दूध आप पीती।'
'और घासके बिना जीती ?
इसी बुद्धिसे है चिड़िया
बिना सहयोगके कौन जिया।।'



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

जब हम औरोंसे मिलें
तो हो इतना ध्यान।
क्या गुण गावें संतका
या ईश्वर-गुण गान॥
परचर्चा, परदोषका—
वर्णन भारी पाप।
अपने उरमें मत भरो,
परकी विष्ठा आप॥



तुमको प्रशंसा-वड़प्पन यदि प्रिय है,
मेरा क्या इसमें बिगड़ता है।
मेरी अद्वितीयता की शोभा यह,
क्षुद्र अहंकार क्यों अड़ता है?



परमाणुमें है विश्व-विखण्डिनी महाशक्ति,
विन्दुमें सिन्धुकी शीतलताका परम सार।
क्षुद्र-क्षुद्र तब तक है, जब तक हम मानते हैं,
जानने का नाम ही अनन्त चैतन्य है॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

नहीं है महत्ता किया क्या क्या है अब तक,
योजनामें क्या क्या है— व्यर्थकी बकवाद।
इसकी महत्ता है—कर क्या रहा हूँ मैं—
कितनी सावधानी—तत्परतासे करता हूँ॥



करता अपकार या निन्दा हमारी जो,
केवल निमित्त है मेरे भाग्य-भोगका।
साथ साथ उसका उपकार यह और भी,
सावधान करता—मेरे अशुभ बँटाता है।



कौन कहता है—
'सन्त सच्चे न मिलते हैं?'
अपना अहंकार तुमसे
छोड़ा नहीं जाता।
अहंकार मुट्ठी बाँध
भटको फिर जीभर यों—
ऐसे भाई! हाथ कुछ—
कभी नहीं जाता॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक, दो, तीन,
मैं रहा हूँ बीन—
ऐसे क्षण,
मृत्यु के अनन्तर भी जो हों रत्न कण ।



शान्ति चाहते हो ?
मन श्याममें लगाओ ।
संसारमें लगनेपर
शान्ति मिला नहीं करती ॥



कोई जगा देगा, कोई मिला देगा,
कोई कर देगा हमारे लिए साधन ।
इस झूठी आशामें—
बहलाते यदि अपनेको,
निश्चय ठगे जायँगे,
भटक जायगा जीवन !



थरथर जिनसे जगत काँपता,
जिनके यश से पूरित अम्बर ।
नाम शेष उनका अब केवल,
चिह्न नहीं उनकी समाधिका ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

मुझसे क्यों पूछते—
"कौन सी राह है ?'
जो न जाती वहाँ—
कौन सी राह है ?
तुम न उतरे तो कैसे—
कहाँ थाह है ?
हाथ जो उसका लो—
थाह ही थाह है ।



उड़ो आकाश में खूब दूर-दूर ।
वृक्षपर आश्रय पर चाहिये जरूर ।।
संसारके वनमें ही लगी दावाग्नि है ।
राममें आश्रय वही आनन्द मग्न है ।।



'झूठी मोह-ममता
झूठी आशा झूठे भोग ।'
कहते सुनते सभी लोग !
लगे हैं पर इन्हींमें रात-दिन,
इसीका तो नाम है—
अविद्या - ग्रस्त जीवन ।



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

पद-पाया , सम्पत्ति मिली , जग मान मिला भरपूर ।
सूर्य-तनयके सामने , होगी शेखी दूर ।।
वहाँ पहुँच कोई नहीं , झूठे सभी उपाय ।
यमुना कान्त मनाइये , मनका मिटे अपाय ।।



कुछ मारते हो मनको ,
कुछ और मार लो ।
थोड़ी-सी जिन्दगी है ,
यों ही गुजार दो ।।
क्यों खड्डुमें बुराई के—
गिरते हो बेकरार ।
यदि उठ न सको तो ,
जहाँ हो , वहीं रहो ।।



जल गयी होली ?
जीवनके दोषोंकी ?
कदर्य कुत्साओंकी ?
कुरूप वासनाओंकी ?
कलुषित अभ्यासोंकी ?
तब सचमुच दिव्य प्रेमकी
भगवदनुरागकी होली है ।
आपकी ।।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

यम वैवस्वत बहुत भयंकर—
काल दण्ड धर, आर्य हैं ।
किन्तु कन्हाईके अपनोंके—
अपने हैं, आचार्य हैं ।।



करना तो कुछ नहीं था कभी,
करनेकी अपेक्षा न है अब भी।
कन्हाईको केवल पुकारना है,
अपने श्रमसे हम डूब चुके,
अब तो उसको उबारना है ।।



'भीति कालकी, ग्रहकी-
कर्मके निर्णायककी'
तुम कहते हो; किन्तु—
'चक्र' क्या खोया ?
'दुःख, दैन्य, दुर्बलता
आर्ति-शोक-रोग भी;
किन्तु—
नन्दका लाल कहीं सोया ?

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

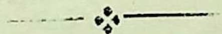
श्रीरामके त्यागकर श्रीचरण-
काम, काम, काम !
भटकते फिरो भयानक भवाटवीमें,
पा नहीं सकते तुम विश्राम ॥



मेरी दुर्बलताएँ-जनाता हूँ-
संख्या नहीं।
उसकी करुणाका पार
पाना क्या सम्भव है ?



कर्ताके राज्यमें-
देर है—अन्धेर नहीं।
किन्तु मेरे दयामय !
देर क्या अन्धेर नहीं ?



मानता हूँ—
दुःख आते हैं मेरी भूलोंसे।
किन्तु मैं भूलता हूँ —
तुम्हारी यह भूल नहीं ?
जब कि तुम मेरे हो।

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

'इस प्रपञ्च—जादूका मतलब ?'
पूछा कभी कहानी ?
पूछ सको तो मरे उसी क्षण—
बस, मायाकी नानी।
पर तुम तो प्रिय !
देख रहे हो, रोते हो-गाते हो।
इसीलिए यह फूली बैठी
तुम आते - जाते हो ॥



कालिके ! करालिके !
कृपाण-तीक्ष्ण धारसे—
त्रिसज्ज मोह वासना—
कठोर रज्जु काट दे !
समस्त मोह छाँट दे !
त्राण दे ! त्राण दे !



आना-जाना, जीना-मरना,
जगका सहज स्वरूप।
तू क्यों डरता रे अविनाशी ?
महाकालका भूप !

———❖———

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

एक-सा यहाँ है—
जीना या मरना।
कुछ भी उत्कण्ठा क्यों ?
किसका क्या करना।
खेल ही है चलता सब
भले-भले, खेल चले।
छुक - छुक करती
कन्हाईकी रेल चले॥



चेतन को जड़ बना नहीं सकते।
सूर्यको छू नहीं सकता अँधेरा॥
अज्ञान-माया-अन्धकार नाम बहुत,
किन्तु मैं चेतन हूँ—इसमें कुछ कहना है ?



'एक दिन मरना है'
व्यर्थ बात—
अमृत पुत्र मैं कभी मरता नहीं।
'देहकी बात'—
व्यर्थ बात
प्रति क्षण छीज रहा
देह रहता नहीं॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

देह तक जोर है

शासकका, शत्रुका।
डाकूका, देवताका॥
भूत-प्रेत सबका।
देहका ममत्व त्याग
परम स्वतन्त्र हम—
ईश्वर भी कुपित हो बिगाड़ेगा
किसका ?



यदि मैं शरीर हूँ-
बहुत दयनीय हूँ।
भूत प्रेत, शेर सर्प,
देवताकी बात छोड़ो,
चींटी और मच्छर
रोज रोज नोच खाते हैं।
यदि मैं शरीर नहीं-
महाकाल सिर पीटे।
अजर अविनाशी मेरा
मृत्यु क्या कर लेगी ?



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

माधव ! तुमने मारा मधुको–
पर मेरे मनका मधु जीता।
विषयोंकी कण कण मिठासपर–
भटक रहा मन – जीवन बीता ॥
कैटभारि ! कैटभ भी जब तब–
फेरे कर जाता है मनमें।
रोष-द्वेषकी ज्वाला जगती,
बुद्धि न रह जाती है तनमें ॥
शेषनागकी शीतल शैया,
पद्मा पदचर्यामें लीना।
पहुँच सकेगी तुम तक मेरी–
व्यथा - आतुरा, मलिना - दीना ?
ओ करुणा-वरुणालय जागो !
निद्रा त्यागो ! विरद बचा लो !
नारायण ! नरके अन्तरमें–
ये मधु-कैटभ, इन्हें सम्हालो !!



तुम नहीं, हम नहीं, हमारा नहीं।
सच पूछो तो—कोई पसारा नहीं ॥
खिलाड़ी बहुत है कन्हाई बहुत।
दूर उससे जो बैठे—गुजारा नहीं ॥



CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

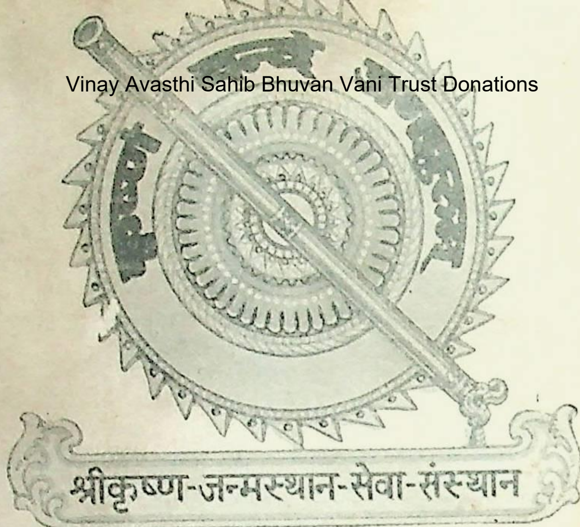
Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vani Trust Donations



श्रीकृष्ण-सन्देश

[आध्यात्मिक मासिक-पत्र]

श्रीकृष्ण-सन्देशका वर्ष जनवरीसे प्रारम्भ होता है। 'श्रीकृष्ण-सन्देश' प्रतिमास लगभग ७२ पृष्ठ पाठ्य-सामग्री देता है।

वार्षिक शुल्क	**१० रुपये।**
आजीवन शुल्क	**१५१ रुपये।**

सम्भव हो तो आजीवन ग्राहक बनें।

व्यवस्थापक—**श्रीकृष्ण-सन्देश**
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान
मथुरा—२८१००१

" यह पुस्तक भारत सरकार द्वारा रियायती मूल्यपर उपलब्ध किये गये कागजपर मुद्रित-प्रकाशित है।"

CC-O. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. An eGangotri Initiative